''ऊन''

ऊन प्राकृतिकम तंतु है जो हमें जानवरों के शरीर के रोयें से प्राप्त होता है। जानवरों के शरीर से रोंये को काटकर विभिन्न प्रक्रिया द्वारा उनके सुत तैयार किये जाते हैं फिर उनके वुलेन वस्त्र तैयार किये जाते हैं। अभी कपड़े सर्दी से हमारे शरीर की रक्षा करती है। यह हमें भेड़, याक, बकरी, ऊँट इत्यादि जानवरों से प्राप्त होती है। यूरोप में सबसे अच्छा ऊन स्पेन में उत्पन्न होता है। यहाँ का ऊन मेरिनोपूल के नाम से प्रसिद्ध है।

भारत में भी प्राचीन काल से ही ऊन के बने वस्त्र तथा कंबल प्रसिद्ध रहा है। कश्मीर के पश्मीना शॉल सुक्ष्म बारीक तथा सुन्दरता के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हैं। कश्मीर में पश्मीना के अतिरिक्त शाहतुरन, नमदा, लुई, गाभ, गर्म चादरे, कोट इत्यादि बनते हैं। ऊन प्रमुख रूप से अर्जेन्टाइना, आस्ट्रेलिया, ब्रिटिश, द्वीप समुह, भारत, दक्षिणी अफ्रीका तथा अमरीका में उत्पन्न किया जाता है। स्थान विशेष जलवायु, आहार, देखरेख तथा पशुओं का स्वास्थ्य ऊन की किस्म श्रेणी को प्रभावित करते हैं। ठण्डी जलवायु वाले प्रदेशों की भेड़ों से प्राप्त ऊन सुंदर एवं चमकिला होता है जितने भी ऊनी वस्त्र बनते हैं उसमें अधिकांश भाग भेड़ से ही प्राप्त होते हैं। भेड़ अनेक जातियों की होती है। मेरिनो जाति के भेड़ से प्राप्त ऊन सबसे अच्छा होता है। ऊन कोगल रेशा है और बहुतायात से नहीं मिलता है। अतः जितनी अच्छी ऊन की क्वालिटी होती

है उतने ही अधिक मूल्य के मिलते हैं। अतः इनका अच्छी तरह जाँच पड़ताल कर चयन करना भलीभांति देख–रेख एवं संरक्षण करना जरूरी काम है।

ऊन का उत्पादन और निर्माण प्रक्रियाएँ :

1. **कटाई (SHEARING) :** ऊन के उत्पादन के जानवरों के शरीर पर से बालों को हवा दिये जाते हैं भेड़ के बाल नीचे की तरफ आपस में फँसे और सटे रहते हैं। अतः ये एक परत में कट जाते हैं। इस अवस्था में इनके रोये में प्राकृतिक तैलिय पदार्थ तथा अशुद्धियां रहती है। अतः यह ग्रीज ऊन कहलाता है। इस ग्रीज को गर्म पानी से धोकर हटा दिया जाता है। रोये काटने के पहले भेड़ को भिंगो दिया जाता है।

2. **छँटाई तथा ग्रेडिग (SORTING AND GRADING) :**

एक ही भेड़ के शरीर से 15 से 20 श्रेणियों का ऊन प्राप्त होता है। अतः जानकार व्यक्ति द्वारा जो देखकर और स्पर्ष करके विभिन्न किस्मों को अलग–अलग कर देता है।

3. **स्वच्छ करना (SCOURING) :**

इस प्रक्रिया में काटे तथा छटाई किए हुए जानवरों के रेशों को हल्के क्षार के घोल में कई बार धोया जाता है इस प्रक्रिया से जब अधिक सफाई नहीं हो पाती है तो उसे सल्फ्युरिक एसिड अथवा हाइड्रोक्लोरिक एसिड से धोया जाता है। इस विधि को **कारबोनाजिंग** की क्रिया कहते हैं।

4. **सुखाना (DRYING) :** साफ करने के बाद इसे पूरी तरह सुखाया नहीं जाता है नहीं तो ये बहुत अधिक कड़ा हो जाता है। इसे अंशतः गीला घोर दिया जाता है।

5. **चिकनाना (OILING) :**

धोने के बाद इनमें इतना अधिक स्खापन आ जाता है कि इनके ऊपर जैतुन के तेल का छिड़काव किया जाता है। छिड़काव के बाद ये चिकने और नरम हो जाते हैं।

6. **रेंगना (DYEING) :**

ऊन को इसी स्थिति में रंग दिया जाता है।

7. **सम्मिश्रण (BLENDING) :**

ऊन के उत्तम श्रेणी के रेशों में मध्यम श्रेणी के रेशों को बुनाई के पहले मिला दिया जाता है। इसका कारण है कि उत्तम श्रेणी के रेशों की कताई ठीक से नहीं हो पाती है क्योंकि सूक्ष्म होने के साथ निर्बल भी होते हैं और बहुत ज्यादा मात्रा में मिलती भी नहीं है कभी कभी मजबुती के लिए इनमें कपास के रेशें को मिला दिया जाता है।

8. **धुनाई (CARDING) :**

कार्डिक की प्रक्रिया के पहले यह निश्चित कर लेना होता है कि इस रेशा से किस प्रकार के वस्त्र तैयार करने हैं। इस प्रक्रिया में रौलरो की सहायता से सुलझाया जाता है। सुलझाने के साथ–साथ में कुछ समानान्तर भी

हो जाते हैं क्योंकि ऊनी रेशे कुछ टेढ़े मेढ़े रोये पौर तथा फुज्जीदार सतह के होते हैं।

वस्टैड रेशे बनाने के लिए विशेष प्रकार की कार्डिंग की जाती है इन पर तब तक रौलर चलाया जाता है। जब तक रेशे की सतह पूरी तरह समानान्तर तथा चिकनी न हो जाये।

9. कंघी करना (COBING) :

कान्बिरा सिर्फ वर्स्टेड कपड़ों के लिए ही किया जाता है। इसमें पहले से ही शिलिंग की प्रक्रिया कर दी जाती है जिसके कारण बड़े रेशों से छोटे रेशे अलग कर लिए जाते हैं। इसके पश्चात् बड़े रेशों पर कंघी की जाती है। छोटे रेशों को अन्य दूसरे रेशों में मिला दिया जाता है। लम्बे रेशे जो 4'' से लम्बे होते हैं, वो सुन्दर तथा मजबुत होते हैं। वर्स्टेड के मूल्यवान वस्त्रों में इन्हीं रेशों का प्रयोग किया जाता है।

10. धागे खींचना (DRAWING OUT) :

यह प्रक्रिया भी सिर्फ वर्स्टेड के कपड़े पर ही की जाती है। इसमें कई धागों को मिलाकर सघन बनाया जाता है फिर इन्हें खींचकर पतली पूनियाँ बनाई जाती है और हल्की बटाई कर दी जाती है।

11. धुमाना (ROVING) :

बनाई गई पुनियों को फिर एवं बार बटाई की जाती है ताकि रेशे इकट्ठी होकर सटे रहे।

12. कताई (SPINNING) :

इस प्रक्रिया में पुनाई में से धागो की कताई के द्वारा पूर्ण धागा बनाया जाता है। ऊनी वस्त्र के लिए क्यूल फ्रेश पर कताई की जाती है। धागा मोटा, मुलायम, फुज्जीदार निकाला जाता है। जबकि वस्टेड के लिए धागा चिकना, पतला, गोलाकार तथा कड़ा बनाना अनिवार्य है।

13. बुनाई (WEAVING) :

ऊलेन वस्त्र की बुनाई प्रायः सादी टुईल बुनाई से तैयार की जाती है। इसकी सतह पर रोयें रहते हैं। अतः बुनाई पहचानना मुश्किल होता है।

14. भराई (FULLING) :

तैयार वस्त्रों को साबुन युक्त पानी में डाल कर फिर दबादबा कर घुमाया जाता है जिससे रेशे की दुरी कुछ कम हो जाती है।

इसका कारण है वे आपस में एक दूसरे से फंसकर चिपक जाते हैं। इस प्रक्रिया से वस्त्र को जितना सिकुड़ना होता है सिकुड़ जाते हैं। फलस्वरूप वस्त्र मजबुत और टिकाऊ बन जाते हैं।

15. स्थिर करना (CARBBING) :

इस विधि में भारी सिलिडंरों के द्वारा तैयार वस्त्र को स्थिर किया जाता है। साथ ही आयरन भी हो जाती है।

16. ब्लींचिंग एवं रंगाई (BLEACHING AND DYEING) :

ऊनी कपड़े के पीलेपन को हटाने के लिए वस्त्रों पर सफेदी लाई जाती है तथा आम्लिय रंग में रंग दिया जाता है।

17. परिष्कृति एवं परिसज्जा (FINISHING) :

ऊनी वस्त्रों को दोषमुक्त करने के लिए उठे हुए रेशों तथा गाँवो को काट कर, सतह को साफ कर दिया जाता है। रोएँ काटना तथा आयरन करना आदि जैसे कार्य परिष्कृति अैर परिराज्य द्वारा सेवारना तथा सजाया जाता है। ऊनी वस्त्रों पर अनेक प्रक्रियाएँ होती है किन्तु ये आवश्यक नहीं है कि सारे वस्त्र पर सभी प्रक्रियों की जाये इन प्रक्रियो का चुनाव करते समय वस्त्र की विशिष्ट आवश्यकता तथा उसके विशेष प्रयोग को ध्यान में भी रखा जाये।